जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ११ वा ❖ जुलै २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● गुरुवाणी है मन्त्र सम, कृपा मोक्ष का मूल	१५	● मोतीबिंदूची मुख्य लक्षणे काय आहेत ?	६५
● विद्वत संगोष्ठी की सफलता निर्मल आचार के पालन में	१९	● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तर प्रवचन	६६
● खासदार श्री. मुरलीधर मोहोळ	२२	● सवाल में ही जवाब	६९
● श्री पद्मप्रभूजी तीर्थ - जयपूर, राजस्थान	२३	● हास्य जागृती	७०
● श्री. आनंदजी भंडारी - IAS निवड	२४	● सदकर्म में अटूट विश्वास	७१
● कव्हर तपशील	२५	● पूना हॉस्पिटल - रुग्णसेवेची ४० वर्ष	७५
● जैन समाज गौरव - श्री. अशोकजी चोरडिया	३१	● अरिहंत जागृती मंच - निबंध स्पर्धा	७६
● छोटी सी बातें	३५	● समग्र जैन चातुर्मास सूची २०२४	७७
● आधुनिक युगात जैन श्रावकाचार	३६	● महावीर फुड बैंक, पुणे - धान्य वाटप	७८
● बुद्धिमान अभयकुमार	४१	● जयती जैनम् साधना तीर्थ - भिवरी	७९
● हमारे पर्व दिन	४४	● आनंदऋषिजी नेत्रालय - अहमदनगर	८०
● मोक्षमार्ग के २१ कदम : भावना	४५	● कर्मयोद्धा श्री. सुवालालजी शिंगवी	८१
● असंही करुन बघुया	४८	● कडवे प्रवचन	८१
● सौभाग्य का सुर्योदय नवकारशी	४९	● World Parents Day	८७
● Password - पासवर्ड	५१	● २० विहारमान तीर्थंकर नाम	८७
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	६१	● प्रवीण मसालेवाले ट्रस्ट - पुणे	८९
● क्षमा करा बाबा	६४	● आई बाबा हवेत...	८९

- दि पूना गुजराती बंधु समाज – नेत्रशिबीर ९०
- सकल जैन वधू वर परिचय संमेलन, पुणे ९०
- महावीर जन्म कल्याणक उत्सव, जर्मनी ९१
- अंग्रेजी के चार शब्द ९१
- जीवन बोध : पशुओं में सहिष्णुता ९२
- श्री. सुनील जैन – खाबिया, मुंबई – पुरस्कार ९२
- श्री. दलिचंदजी शिंगवी – पुरस्कार ९३
- वीतराग सेवा संघ, पुणे ९३
- वैराग्य वाणी ९५
- ऑलिम्पियाड परीक्षेबद्दल सर्व काही ९९
- सुरक्षा : गाडी चलाइए, उडाइए मत १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. Google Pay - Mob. : 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

गुरु वाणी है मन्त्र सम, कृपा मोक्ष का मूल

लेखक : राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

आज आषाढी पूर्णिमा है। जैन संस्कृति में यह दिन चातुर्मास स्थापना का पहला दिन है। आषाढी पूनम की रात्रि के पश्चात जैन श्रमण चारमास तक एक ही ग्राम नगर में स्थिरवास करते हैं। भ्रमणशील जीवन में यह स्थिरता का सूचक है।

हिन्दू संस्कृति जिसे वैदिक संस्कृति के नाम से जानते हैं, वह भारतीय संस्कृति की एक मुख्यधारा है। श्रमण संस्कृति का प्रतिनिधित्व जैन संस्कृति करती है तो हिन्दू संस्कृति का प्रतिनिधित्व वैदिक संस्कृति या ब्राह्मण संस्कृति करती है। वैदिक संस्कृति के अनुसार आषाढ़ सुदि १५ का दिन गुरु पूर्णिमा का दिन है। इस दिन गुरुजनों की पूजा, वन्दना और उपासना की जाती है। ज्ञानदाता गुरुओं का सम्मान किया जाता है। इस तिथि को 'व्यास पूर्णिमा' भी कहते हैं।

गुरु का महत्व

भगवान महावीर के चतुर्थ पट्टधर श्री शय्यंभवसूरि ने दशवैकालिक सूत्र में एक बहुत बड़ी बात कही है कि शिष्य चाहे केवलज्ञानी बन गया हो और गुरु चाहे छद्मस्थ ही रहे हों, फिर भी शिष्य अपने ज्ञानदाता, दीक्षादाता गुरु का विनय करे, उनकी पूजा उपासना करे। गुरु के सम्मान में, इससे बड़ी बात और क्या कही जा सकती है? एक तरफ अनन्तज्ञानी, समुद्र की तरह असीम ज्ञान-दर्शन का धारक शिष्य और एक तरफ चुल्लू भर जल के धारक के तुल्य अल्पज्ञानी छद्मस्थ गुरु ! कोई तुलना नहीं है। कहाँ सुमेरु, कहाँ लघुकण ! किन्तु यहाँ सुमेरु भी कण को नमस्कार करता है, समुद्र भी बूँद को प्रणाम करता है, सूर्य भी किरणों की वन्दना करता है, क्योंकि गुरु हमारा उपकारी है। जैन दर्शन में कहा गया है- 'तित्थयर समोसूरी' आचार्य तीर्थकर के समान होता है। इस संदर्भ में संत कबीर ने भी कहा है-

गुरु-गोविन्द दोऊ खडें, काके लागू पाँय ।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय ।।

इस दोहे की पहली पंक्ति में कबीर स्वयं से ही प्रश्न करते हैं कि मेरे सामने गुरु और गोविन्द दोनों खड़े हैं। मेरे लिए दोनों ही वन्दनीय और प्रणम्य हैं, पर मैं पहले किसके चरण स्पर्श करूँ, गुरु के या भगवान के? दूसरी पंक्ति में वे स्वयं ही सटीक उत्तर देते हैं कि पहले मैं गुरु पर न्यौछावर हूँ, क्योंकि गुरु-कृपा के बिना मुझे भगवान नहीं मिलते।

गुरु व भगवान के बारे में एक बात और कही जाती है कि अगर भगवान रूठते हैं तो गुरु उन्हें मना देते हैं। लेकिन यदि गुरु ही रूठ जायें तो शिष्य का कहीं ठिकाना नहीं - हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।

केवली भगवान तो स्वयं अपने गुरु को नमस्कार करते हैं। गुरु छद्मस्थ या साधारण ही सही, पर केवलज्ञान की उपलब्धि में गुरु कृपा ही तो कारण है। इसीलिए कहा गया है-

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरुः कृपा ।।

जैन-वैदिक दोनों परम्पराओं में गुरु महिमा सर्वोपरि है। वैदिक परम्परा में तो ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों का स्वरूप एक गुरु में ही समाहित है, यहाँ तक कि परम ब्रह्म भी गुरु ही है। गुरु ग्रंथ साहिब में भी कहा गया है-

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्दु,
गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवन्तु ।

एक संस्कृत सूक्ति है - मुक्तिदा गुरुवांगेका विद्या: सर्वा विडम्बका: अर्थात गुरु का एक ही वचन मुक्तिदाता बन जाता है। उसके आगे अन्य सब विद्याएँ विडम्बना मात्र है ।

इतना ही नहीं, कोई शिष्य ब्रह्मा और शिव के

समान ही ज्ञानी क्यों न हो, गुरु के बिना वह भी संसार सागर को पार नहीं कर सकता-

गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई।
जाँ बिरंचि संकर सम होई ।।

भारतीय संस्कृति त्रिकमयी है। जैसे सत्त्व-रज-तम, तीन गुण। तीन लोक। तीन देव-ब्रह्मा, विष्णु, महेश। इसी तरह जैन परम्परा में देव, गुरु, धर्म। ज्ञान, दर्शन, चारित्र। उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य। इसी त्रिक के आधार पर द्वादशांगी की रचना हुई है। वैदिक परम्परा में ब्रह्मा-विष्णु-महेश त्रिदेव के बोधकर्ता गुरु ही हैं तो जैन परम्परा के त्रिक देव-गुरु-धर्म के मध्य में रहने वाले गुरु ही तीर्थंकर देव तथा सद्धर्म का बोध कराते हैं।

त्रिदेवों की प्रत्यक्ष-उपलब्धि

ब्रह्मा-विष्णु-महेश सुने-पढ़े जाते हैं, किन्तु माता-पिता-गुरु के रूप में आप सभी को इनकी प्रत्यक्ष उपलब्धि अपने जीवनकाल में होती है और होती रहेगी।

ब्रह्मा जन्म देने वाले सृष्टिकर्ता हैं तो जन्म देने वाली जननी या माता साकार ब्रह्मा है। विष्णु पालनकर्ता है तो पिता धनोपार्जन और लाड़-प्यार से आपका पालन करते हैं तो वे साकार जीते जागते विष्णु हैं। महेश संहारकर्ता है तो गुरु या शिक्षक आपके अज्ञान, कषाय, दुर्गुणों का संहार करने के कारण महेश हैं। यों आप जीवनकाल में त्रिदेवों को प्रत्यक्ष पाते हैं। इन तीनों में भी गुरु समाहित हैं, क्योंकि हर बालक की पहली गुरु माता, दूसरे गुरु पिता और तीसरे गुरु कलाचार्य-शिक्षक तथा आध्यात्मिक गुरु संत है। जैन सिद्धान्तदीपिका का सूत्र है - महाव्रतधरः साधुर्गुरुः अर्थात् महाव्रतधारी साधु गुरु कहलाता है।

नीतिकारों ने गुरु को व्यावहारिक दृष्टि से कुम्हार, माली और शिल्पकार की उपमा दी है। कुम्हार मिट्टी के लोंदे को एक सुन्दर घड़े का, आकार प्रदान कर उसे इतना महत्वपूर्ण बना देता है कि वह कुलवधुओं के सिर पर शोभायमान होता है। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबके लिए उपयोगी हो जाता है। माली नन्हे नन्हे बीजों को खाद-पानी देकर अंकुरित करता है, पौधे बनने पर उनकी कटिंग-सैटिंग करता है, उनका संरक्षण करता है और फिर फूलों को चुन-चुनकर हार बना देता है, जो हार देवताओं व राजाओं के गले में पहनाया जाता है। फूल भगवान के चरणों में चढ़ते हैं। बीजों से तरह-तरह के पौष्टिक व स्वादिष्ट फल उत्पन्न कर सबको लाभ पहुँचाता है। शिल्पकार अनगढ़ पत्थर को तराश कर सुन्दर, कलापूर्ण और भव्य मूर्ति का आकार देता है। रास्ते में पड़ा ठोकरें खाने वाला पत्थर जन-जन का वन्दनीय भगवान बन जाता है। तो जिस प्रकार मिट्टी को घड़े का रूप देने में कुम्हार, बीज को फूल-फल का रूप देने में माली तथा पत्थर को प्रतिमा का स्वरूप प्रदान करने में शिल्पकार की भूमिका है, किन्तु गुरु की भूमिका इससे भी अधिक है। वे पशु तुल्य मानव को हजारों-लाखों मनुष्यों का पूज्य बना देते हैं, यहाँ तक कि क्षुद्र मानव को भी गुरु भगवान तक बना देते हैं।

गुरु दर्पण: गुरु चक्षु

गुरु एक दर्पण है। जिस प्रकार मनुष्य अपना रंग-रूप निहारने के लिए दर्पण में देखता है, दर्पण उसकी सुंदरता और कुरुपता का बोध कराता है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को उसके अस्तित्व का बोध कराते हैं और उसे उसके भीतरी स्वरूप का दर्शन कराते हैं। गुरु शिष्य को तीन बात देते हैं-

पहली बात - शिष्य को कल्याण का रास्ता बताते हैं। संसार में भटकते प्राणी को गुरु धर्म का, अध्यात्म का, आत्मा की शक्तियों को जगाने का मार्ग बताने वाले होते हैं।

दूसरी बात- गुरु शिष्य को ज्ञान देते हैं। वे शिक्षक हैं, अनुशासक है। संसार में किस प्रकार जीना, कैसा व्यवहार करना जिससे स्वयं को भी कष्ट न हो और उसके कारण दूसरों को भी कष्ट नहीं पहुँचे। जीवन की

यह उदात्त शैली गुरु सिखाते हैं। शिष्य के शारीरिक-मानसिक एवं बौद्धिक विकास का प्रशिक्षण गुरुओं से मिलता है। गुरु शिष्य को संसार में जीने की ऐसी ट्रेनिंग देते हैं कि वह आपत्ति-विपत्तियों के तूफान में भी हँसता- मुसकराता जीता है और कठिन से कठिन परिस्थितियों का मुकाबला कर सकता है।

गुरु संसार का वह रहस्य जानता है, जिसे जानकर जीवन में जागृति और शक्ति का संचार किया जा सके। जो ज्ञान शास्त्रों से नहीं मिलता, वह ज्ञान साधना से, अनुभव से मिलता है। गुरु शास्त्रों का ज्ञाता तो होता ही है, परन्तु उन्होंने साधना करके जो अनुभव प्राप्त किया है, उसका अपना अलग ही महत्त्व है। एक ही अनुभव सूत्र से साधक के सम्पूर्ण जीवन को ज्योतिर्मय बना सकते हैं, गुरु।

एक कारखाने में करोड़ों रुपयों की विदेशी मशीन लगी। कारखाना रोज का लाखों का माल बनाने लगा। एक दिन वह विदेशी मशीन चलती-चलती बन्द हो गई। मालिक ने बड़े-बड़े मैकेनिक इंजीनियरों को बुलाया। मशीन चलाने की चेष्टा की, परन्तु कोई भी उस मशीन को चालू नहीं कर सका। कारखाना बंद हो गया। एक दिन बंद होने से ही लाखों का नुकसान हो रहा था। अंत में मालिक ने कम्पनी को फोन कर विदेशी इंजीनियर को बुलाया। इंजीनियर ने पूरी मशीन को चैक किया और एक छोटी-सी हथौड़ी एक जगह मारी। बस, मशीन धड़ाधड़ चालू हो गई।

इंजीनियर ने अपना बिल दिया दस हजार रुपया। मालिक चौंक गया - 'एक हथौड़ी मारने का दस हजार रुपया!' इंजीनियर बोला- 'सेठजी ! हथौड़ी तो कोई भी मजदूर मार सकता है, परन्तु हथौड़ी कहाँ पर मारनी है, चोट कहाँ करनी है, इस टेक्निक का यह दस हजार रुपया है।'

गुरु का महत्त्व इंजीनियर के समान है। शिष्य की साधना में जब कोई अडचन या बाधा आ जाती है, तब शास्त्रों को पलटते जाओ, कोई समाधान नहीं मिलता। किन्तु अनुभवी गुरु तब एक हथौडी ऐसी मारते है कि उसकी साधना की मशीन चालू हो जाती है।

शिष्य की भूल को गुरु ही सुधार सकता है। आचार्य सिद्धसेन राज- सम्मान में पड़कर अपना आचार-विचार भूल गये। उनको समझाने की हिम्मत कौन करे? आखिर गुरु वृद्धवादी सूरि ने ही उनके अहंकार व मोह पर ऐसी चोट मारी कि सिद्धसेन पुनः अपनी जगह आ गये।

जीवन की उलझी समस्याओं को सुलझाना, साधना के विघ्नों का निराकरण करना गुरु ही जानता है। गुरु शिष्य का मार्गदर्शक, सच्चा साथी और सहारा होता है।

तीसरी बात - गुरु की तीसरी भूमिका दाता की है। गुरु एक औघड़दानी है। शिष्य को देता ही रहता है, इतना देता है फिर भी उसका खजाना कभी खाली नहीं होता। जैसे एक दीया अपनी ज्योति के स्पर्श से हजारों हजार दीयों को प्रकाशमान कर देता है, वैसे ही गुरु शिष्य के भीतर अपनी संचित ज्ञान-सम्पदा, आध्यात्मिक सम्पदा, ओज-तेज संक्रमित कर शिष्य के व्यक्तित्व को दिव्यता और श्रेष्ठता प्रदान करता है। कुशल माली या काश्तकार जिस प्रकार प्लांटेशन करके एक वृक्ष में तरह-तरह के फलों के स्वादों की कलमें लगाकर उसका बहुमुखी विकास करता है, गुरु भी शिष्य को विविध प्रकार की साधनाएँ, ज्ञान सम्पदाएँ और संचित अनुभव देकर शिष्य के जीवन को ज्योतिर्मय बना देता है।

पुराणों में कथाएँ आती हैं, देवताओं पर जब कभी संकट आत्ता है, इन्द्र महाराज के सिंहासन को जब भी खतरा पैदा होता है तो देवगण दौड़कर सुरगुरु बृहस्पति की शरण में पहुँच जाते हैं और अपनी रक्षा का उपाय पूछने लगते हैं। दानवों का भी यही हाल है। उन पर जब कभी विपत्ति आती है, देवताओं की ललकार सुनाई देती है तो वे दौड़कर शुक्राचार्य के पास जाते है - 'गुरुदेव । रक्षा करो, उपाय बताओ क्या करें?' मनुष्य

ही क्या, देव और दानव भी अपनी रक्षा के लिए गुरु की शरण में जाते हैं। जैन सूत्रों में आता है, गौतम स्वामी के मन में जब कभी संशय उत्पन्न हुआ तो वे अपने धर्म गुरु भगवान महावीर की शरण में पहुँचते और पूछते 'कमेयं भंते ! – भंते यह क्या है? क्यों है? इसका क्या कारण है?' मन की शंकाओं का समाधान गुरु के सिवाय और कहाँ मिलता है? अज्ञान व संशय के अंधकार में डूबे शिष्य को ज्ञान की आँखें देने वाले गुरु ही है–

अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलीतं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

गुरु पूजा का अर्थ

प्राचीन काल में गुरु शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त आदर व प्रेम का सम्बन्ध होता था। गुरु शिष्य को ज्ञान देता था तो शिष्य भी गुरु के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देता था। गुरु की बात मानना ही वस्तुतः गुरु पूजा का अर्थ है। औपचारिक रूप से हम आज के दिन गुरु पूजा की लकीर पीटते आ रहे हैं, क्योंकि गुरु पूर्णिमा का यह पर्व हमें अपने विद्यालयों की गिरती हुई गरिमा, अध्यापकों या गुरुओं के प्रति गिरता हुआ सम्मान और विद्यार्थियों की बढ़ती अनुशासन हीनता पर गम्भीर होकर सोचने की व समस्याओं के समाधान खोजने की ओर संकेत करता है। जिस विद्या का उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति और कल्याण की साधना था, यह विद्या आज धन और सत्ता पाने का साधन मात्र रह गयी है। इस दशा को सुधारने की दिशा में हम सबको प्रयत्न करना है, यही गुरु पूर्णिमा का सन्देश है।

जैन साहित्य में गुरुपूजा का बहुत व्यापक अर्थ है। गुरु के प्रति सम्मान प्रदर्शन कर उनसे ज्ञान ग्रहण करना शिष्य का प्रथम कर्तव्य है। भगवती सूत्र में गौतम स्वामी रोहक अणगार से कहते है– 'गुरु के मुख से यदि एक वचन भी सुनने को मिला है तो उनके प्रति आदर व कृतज्ञता प्रकट कर उसे ग्रहण करो, तो वह एक ही वचन तुम्हारे लिए कल्याणकारी हो जायेगा।'

रायपसेणिय सूत्र में केशीकुमार श्रमण प्रदेशी राजा को शिष्य व श्रावक का कर्तव्य बताते हैं– 'गुरुजन जहाँ भी मिलें, वहीं पर उनके प्रति हाथ जोड़कर, मस्तक झुकाकर सम्मान प्रकट करना तुम्हारा कर्तव्य है।' भगवान महावीर ने दशवैकालिक सूत्र में गुरुओं की विनय भक्ति का फल बताते हुए कहा है– 'गुरुजनों की विनय, भक्ति व आदर करके जो विद्या प्राप्त की जाती है, वह विद्या फलीभूत होती है। उसे ज्ञान मिलता है, लोक में यश–कीर्ति और समृद्धि मिलती है तथा परलोक में स्वर्ग के सुख एवं मोक्ष के परम सुख प्राप्त होते हैं।

शिष्य से गुरु – ज्ञान, विनय और समर्पण माँगता है। गुरु के लिए शिष्य में चार प्रकार का विनयभाव होना चाहिए– आचार विनय, श्रुत विनय, विक्षेपणा विनय और दोषनिर्धातना विनय। ये चारों विनय गुरु ही शिष्य को उपलब्ध कराता है। गुरु को समर्पण करो तो गुरु बदले में ज्ञान देंगे। वे शिष्य को वह चाबी देंगे, जिससे सुख–समृद्धि के सभी ताले खुल जायेंगे। एक शायर ने कहा है–

न हमने हँस के सीखा है, न हमने रोके सीखा है।
जो कुछ भी सीखा है, किसी के होके सीखा है ।।

इस प्रकार मैंने आपको गुरुपूजा की जो महिमा बताई, उसका सार इन तीन बिन्दुओं में पुनः दुहराना चाहता हूँ। गुरुपूजा के तीन अर्थ याद रखें–

* गुरुजनों के प्रति विनम्र भाव रखें, उनका सम्मान करें।
* गुरुओं की आज्ञा व अनुशासन का पालन करें।
* जो मार्ग गुरुजनों ने बताया है, उस पर जीवन भर चलते रहें।

अब गुरु–महिमा की दो पंक्तियों देकर मैं अपनी बात पूर्ण करूँगा–

गुरु–माँझी से ही मिले, भवसागर का कूल ।
गुरु–वाणी है मंत्र–सम, कृपा मोक्ष का मूल ।। ●

विद्वतसंगोष्ठी की सफलता निर्मल आचार के पालन में

लेखक : आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा.

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय-अनमोल वाणी यथाख्यात- चारित्र के रूप में जानने, मानने और पालने का भेद मिटाती है। जैसा जाना है, माना है, उसी तरह की आराधना करने वाले यथाख्यात चारित्र सम्पन्न साधक वीतरागी बनते हैं। इस वीतराग मार्ग का अनुसरण कराने वाली शास्त्र वाणी का स्वाध्याय आवश्यक है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के शब्दों में जो भी जीवन बनाने और सुधारने में सहायक हैं चाहे वह स्वाध्याय हो, चाहे सत्संग हो, चाहे ज्ञानगोष्ठी हो, चाहे साहित्य- साधना हो, सभी उपक्रम जीवन-निर्माण और समाज-सुधार के लिए आवश्यक हैं।

विद्वत् परिषद्, व्यक्ति-समाज और राष्ट्र-निर्माण में मस्तिष्क और आँख का काम करती है।''

विचारों में जितनी पवित्रता होगी, आचार उतना ही श्रेष्ठ होगा। विचार की पवित्रता में आचार निर्मल होता ही है। जिसका आचरण किया जाता है, वह आचार है। आचार के दो रूप भाई शिखरमल जी सुराणा ने आपके समक्ष रखे हैं। भगवान की आज्ञा का पालन करना विशुद्ध आचार है। सामाजिक व्यवस्था को सामाजिक आचार के रूप में विद्वानों ने प्रस्तुत किया है। समाज को संत लाभान्वित करते हैं इसी तरह विद्वान भी अपने ज्ञान से समाज को लाभान्वित करें, इस दृष्टिकोण को लेकर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के इन्दौर चातुर्मास में सन् १९७९ में प्रथम बार विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। डॉ. नरेन्द्र भानावत, फकीरचन्दजी मेहता और कन्हैयालालजी लोढ़ा जैसे विद्वानों का चिन्तन बना कि संत-समाज अपने पास आने वालों को लाभान्वित करता है, मार्गदर्शन देकर उनका जीवन-निर्माण करता है, पर विद्वान लोग प्रचार के माध्यम से, साहित्य के माध्यम से, संगोष्ठियों के माध्यम से सामाजिक दृष्टिकोण को लेकर समाज में आचार की पवित्रता लाने में सहयोगी बन सकते हैं।

जोधपुर में विद्वत् परिषद् का कार्यक्रम चल रहा है। संगोष्ठी में अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार विषय रखा गया है। विषय कहने में जितना सरल है, उतना ही पालने में कठिन है। समाज में आचार की स्थापना करना सरल नहीं है। आचार का पालन कठिन है, क्योंकि मर्यादा विरुद्ध जितने भी काम चल रहे हैं उनकी बुराई बताकर, हानि समझाकर समाज उनसे कैसे दूर रहे, विकृति से समाज कैसे बचे, यह बहुत टेढ़ा काम है।

सम्पदा मिलना पुण्यवानी का द्योतक है। जिसकी जितनी पुण्यवानी है उसे उतनी उतनी सम्पदा मिलती है। प्रभुत्व बढ़ना, अनुकूल साधन मिलना, बाहर की सामग्री जुटाना अनन्त-अनन्त पुण्यवानी से होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन में जिन चार स्कन्धों का उल्लेख मिलता है, वे पुण्यवानी के द्योतक कहे गये हैं-

खेत्तं वत्युं हिरण्णं च, पसवो दास-पोरुसं।
चत्तारि काम-खंधाणि, तत्थ से उववज्जए ।।

- उत्तराध्ययन सूत्र ३/१७

भगवन्त ने हिन्दी में इसका रूपान्तरण किया-

क्षेत्र वास्तु हिरण्य स्वर्ण,
पशुदास अंगरक्षक होते।
ये चार जहाँ हो काम स्कन्ध,
उस कुल में वे पैदा होते ।।

पुण्यशाली जीव वहीं जाकर उत्पन्न होता है जहाँ खेत हों, आवास योग्य स्थान हों, पशुधन हों, दास-दासी हों। पुण्य से साधन मिलते हैं, पुण्य से सामग्री मिलती है, पुण्य से प्रभुत्व प्राप्त होता है, शक्ति मिलती है। शारीरिक शक्ति, बौद्धिक शक्ति, मानसिक शक्ति जैसे शक्ति के कई रूप हैं। शरीर का बल देखना हो तो चक्रवर्ती का देखें। आपने सुना होगा कि चक्रवर्ती के हाथ की साँकल पर चारों सेनाएँ लटक जायें फिर भी हाथ नीचे आना तो दूर, हिलता तक नहीं। वहीं चक्रवर्ती अपना हाथ खींच ले तो पकड़ी हुई चारों सेनाएँ लुढ़क जाती हैं। यह चक्रवर्ती का बल पुण्यशीलता से है।

आचार्य की आठ सम्पदाएँ हैं, उनमें एक सम्पदा है- संग्रहपरिज्ञा। संग्रहपरिज्ञा में क्षेत्र का, संतों की संख्या का, अनुकूल स्थितियों का जो भी संग्रह है इस सम्पदा में शुमार है। संग्रह करना न पाप है, न भ्रष्टाचार। संग्रह पुण्यवानी से होता है। हमारी जितनी-जितनी पुण्यशीलता है उतने उतने अनुकूल साधन मिलते हैं, मिलेंगे। सम्पदा शालिभद्र के पास थी वह भ्रष्टता से नहीं, पुण्यशीलता से थी।

आपका आज का विषय है- भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार क्या है- इस पर विद्वान अपना चिन्तन रख रहे हैं। मेरी दृष्टि से मिली सम्पदा का दुरुपयोग है भ्रष्टाचार। इसी प्रकार प्राप्त योग्यता, सामर्थ्य एवं बल का दुरुपयोग भी भ्रष्टाचार है। दुरुपयोग चाहे तन का है, मन का है, वचन का है, जिसके पास जो भी बल है उसका यदि दुरुपयोग हो रहा है तो भ्रष्टाचार है। तन का बल होता है, ऐसे ही धन का बल भी होता है, परिवार का भी बल होता है। सत्ता का भी बल कम नहीं है। प्राप्त सम्पदा का, प्राप्त बल का जहाँ दुरुपयोग है वहाँ भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टता कितने प्रकार की होती है? आप सुन चुके हैं। मैं उन बातों को नहीं दोहराते हुए केवल इतना कहना चाहूँगा कि हर आचार में भ्रष्टता हो सकती है। नियम, कायदे-कानून और सिद्धान्तों से आप परिचित हैं। जो भी नियम हैं, मर्यादाएँ हैं, सिद्धान्त हैं उनका सम्यक् पालन हो। सम्यक् पालन स्वभाव है। स्वभाव में आने की बजाय विभाव में जाना भ्रष्टाचार है। विभाव में जाने के जितने भी साधन हैं वे सब भ्रष्टाचार में शुमार हैं। हमारी आत्म-समाधि जहाँ भी समाप्त होती है वह सब भ्रष्ट आचरण में समाहित है।

आचार में भ्रष्टता कैसे आती है? आचार में भ्रष्टता आती है विचार की भ्रष्टता से। विचारों में भ्रष्टता आयेगी तो आचरण भ्रष्ट होगा। इसके लिए दृष्टि की पवित्रता चाहिये। दृष्टि पवित्र नहीं तो विचार एवं आचार की निर्मलता नहीं आ सकती। शास्त्र की भाषा में कहूँ- बाहर का हर एक आचार और उसका पालन करके जीव नौग्रैवेयक तक चला जाये तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं, पर जब तक विचारों की पवित्रता नहीं होगी, तब तक जीव भवी नहीं बनता। ऊपर से हर नियम का सम्यक् पालन करते हुए भी अगर दृष्टि में परिवर्तन नहीं, तो कहना होगा वह बाहर का आराधक है, भीतर का विराधक।

हमारे यहाँ दर्शन-ज्ञान-चारित्र को मुक्ति का मार्ग कहा है। जब तक दृष्टि में पवित्रता-निर्मलता नहीं, आचार की शुद्धता नहीं आ सकती। आचार की निर्मलता के लिए विचार की पवित्रता चाहिये। आपने मुहावरा सुन रखा- है- ''दृष्टि बदल गई तो सृष्टि बदलते देर नहीं लगती।''

दृष्टि बदलने के लिए बाहर के निमित्त की अनिवार्यता नहीं। फिर कह रहा हूँ- शास्त्र वाणी, विद्वान संत ही नहीं, केवलज्ञानी तक भी हमें रास्ता ही दिखा सकते हैं, तारने में वे भी समर्थ नहीं हैं। भगवान् तारने वाले होते तो महावीर प्रभु सबसे पहले गौतम को तारते। गणधर गौतम स्वामी का ज्ञान, उनकी श्रद्धा-भक्ति और समर्पण क्या कम था? उनकी पुण्यशीलता थी, साधना थी, ज्ञान था, सब कुछ होते हुए भी

भगवान महावीर स्वामी के रहते वे केवलज्ञानी नहीं बन सके। आप जानते हैं, आपने सुन रखा है कि भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। मुक्ति के लिए विचारों की पवित्रता चाहिये तो आचरण की निर्मलता भी चाहिये।

आज कई कानून हैं। नित नये कानून बन रहे हैं। चाहे जितने कानून बन जायें, लोकपाल का विधेयक भी बन जाये, उससे क्या होगा? पहले से कई अधिकारी हैं, कई और अधिकारी बढ़ जायेंगे उससे भ्रष्टाचार मिट जायेगा, कहा नहीं जा सकता। भ्रष्टाचार मिटता है दृष्टि बदलने से। भ्रष्टाचार मिटता है आचार की शुद्धि से। आप गृहस्थों में, समाज में आम लोगों में ही नहीं, साधक वर्ग भी भ्रष्टाचार से पूर्ण मुक्त नहीं है। साधना करने वाले भी जब तक यथाख्यात चारित्र नहीं प्राप्त करते, तब तक उनका भी भ्रष्ट आचरण रह सकता है।

हम (साधु) भ्रष्टाचार से मुक्त होने की राह पर चल रहे हैं। पूर्ण मुक्त हो गये हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आप श्रावक हैं तो आपको परिवार की, समाज की, राष्ट्र की सेवा में भागीदारी निभानी है। यहाँ यह ध्यान में रखना होगा कि हमारी दृष्टि में पवित्रता रहे, आचरण में निर्मलता रहे। दृष्टि की पवित्रता में छोटे-बड़े का भेद नहीं किया जा सकता। एक चक्रवर्ती की दृष्टि पवित्र हो सकती है तो एक भिखारी में भी दृष्टि की पवित्रता रह सकती है। बाहर का संग्रह पुण्यवानी से है तो आचरण की पवित्रता व्यक्ति की दृष्टि पर निर्भर है। हमारे देश की आचरण की पवित्रता जगत विख्यात थी। एक समय ऐसा भी था जब भारत में जवाहरात की दुकानों पर भी ताले नहीं लगते थे। रास्तें में छोटी-मोटी चीज नहीं, रत्नों की पोटली भी मिल जाती थी तो उसे भी मालिक तक पहुँचाया जाता था। वह भारत की आदर्श स्थिति थी। भारत उस समय जगत्गुरु के नाम से विख्यात था। भारत का नाम यहाँ के निवासियों के आचरण से था। आज क्या स्थिति है?

आज की स्थिति आप देख रहे हैं, अनुभव भी कर रहे हैं। आज सुख प्राप्ति के लिए भ्रष्टता बढ़ती जा रही है। अपने सुख के लिए दूसरों को दुःख देना भ्रष्टाचार का मूल है। आप इस भ्रष्टाचार को मिटाना चाहें, हटाना चाहें, निर्मूल करना चाहें तो आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के प्रिय भजन की कड़ी याद करें-

अपने दुःख सब सहूँ,
किन्तु पर दुःख सहा न जाय।
दयामय ऐसी मति हो जाय ।।

हमारी भावना में दूसरों का दुःख खटकने लगे तो फिर भ्रष्ट आचरण के बजाय श्रेष्ठ आचरण ही होगा। आपने देखा होगा- काले बादल सफेद हो जाते हैं। बादल समुद्र से पानी ग्रहण करते हैं तब तक काले दिखाई देते हैं। बरसने के बाद काले दिखने वाले बादल सफेद हो जाते हैं, साफ दिखाई देते हैं। पानी बरसा कर दूसरों के दुःख दूर करके अथवा उनका उपकार करके वे निर्मल सफेद हो जाते हैं। यही बात है- हम दूसरों के दुःख दूर करके आगे बढ़ सकते हैं। यही अनुकम्पा है। यही सम्यक्त्व है। हम इस आचरण का पालन करें। आचार-धर्म का पालन करते-करते हम वीतरागता प्राप्त कर सकते हैं।

आपने विद्वत संगोष्ठी में बहुत कुछ सुना है, बहुत कुछ सुनेंगे। आप सुनकर ही न रहें, उसे आचरण में लाएँ। टन भर सुनें, मण भर ग्रहण करें और कण भर भी धारण करेंगे तो भी एक-एक बूँद धारण करते-करते बहुत कुछ धारण कर सकेंगे। जरूरत है एक-एक आचार का निर्मल पालन करते हुए हम-सब अपने आपको भ्रष्टाचार से मुक्त करके जीवन को पावन बनाने का संकल्प लेकर यहाँ से जाएँ। अपनी लोभवृत्ति और भोगवृत्ति मिटाकर, इच्छाओं और कामनाओं को हटाकर स्वभाव में आने की दृष्टि बनायेंगे तो विद्वत्संगोष्ठी का यह आयोजन सफल हो सकेगा। ●

कव्हर तपशील - जुलै २०२४

❖ **श्री पद्मप्रभुजी तीर्थ, राजस्थान**

जयपूर, राजस्थान येथील श्री पद्मप्रभुजी तीर्थचा लेख पान नं. २३ वर दिला आहे.

❖ **खासदार श्री. मुरलीधर मोहोळ**

पुणे येथील श्री. मुरलीधर किसन मोहोळ हे पुणे लोकसभा मतदार संघातून खासदार म्हणून निवडून आले व त्यांचे केंद्र सरकार मध्ये सहकार आणि नागरी विमान वाहतूक राज्यमंत्री म्हणून नियुक्ती करण्यात आली. (बातमी पान नं. २२)

❖ **श्री. अशोकजी चोरडिया, पुणे**

जैन समाज गौरव श्री. अशोकजी धनराजजी चोरडिया – सॉलिटेअर ग्रुप यांचा जीवन परिचय लेख पान नं. ३१ वर दिला आहे.

❖ **जयंती जैनम् साधना तीर्थ, भिवरी**

जयती जैनम् साधना तीर्थ, भिवरी, पुणे येथे गुरु माँ डॉ. मंजुश्रीजी म.सा. यांचा जन्मोत्सव व नवनिर्वाचित कार्यकारणीचा शपथविधी समारोह संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ७९)

❖ **पूना हॉस्पिल, पुणे**

पुणे येथील पूना हॉस्पिटलने रुग्णसेवेची ४० वर्षे पूर्ण केल्या निमित्ताने विशेष कार्यक्रमाची आयोजन करण्यात आले. (बातमी पान नं. ७५)

❖ **प्रवीण मसालेवाले ट्रस्ट**

प्रवीण मसालेवाले ट्रस्ट व रोटरी पूना डाऊनटाऊन यांच्या वतीने दिव्यांगांना तीन चाकी सायकल दुकानाचे वाटपाचा शुभारंभ करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८८)

❖ **अरिहंत जागृती मंच, पुणे**

अरिहंत जागृती मंच तर्फे निबंध स्पर्धेचा पारितोषिक प्रदान समारंभ उत्साहात संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ७६)

❖ **श्री. सुवालालजी शिंगवी, अहमदनगर**

''स्नेहालय'' या सामाजिक संस्थेचे संस्थापक अध्यक्ष श्री. सुवालालजी जेठमलजी शिंगवी यांचा ८२ वा वाढदिवस उत्साहात साजरा करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८१)

❖ **श्री. सुनिलजी जैन – खाबिया, मुंबई**

मुंबई येथील समाजसेवी, राजकारणी श्री. सुनीलजी जैन खाबिया यांचा जर्नलिस्ट काऊंसिल ऑफ इंडिया यांच्या वतीने समाज कार्याद्दल सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९३)

WE ARE

BRAND CREATORS

ADVERTISE WITH US

Jain Jagruti

(Since 1969)

Mobile : 9822086997, 8262056480
E-mail : jainjagruti1969@gmail.com
Website : www.jainjagruti.in